

बहते रक्त को पीने वाली दिव्य स्त्रियों का एक वर्ग जिनकी संख्या 64 मानी जाती है 4. देवी, योगमाया 5. दुर्गा देवी की आठ सहचरियों में से प्रत्येक 6. ज्यो. योगिनी दशा चक्र जिसमें बारी बारी से आठ योगिनियों की दशा आती है, पहली योगिनी की दशा 1वर्ष तो आठवीं योगिनी की दशा 8 वर्ष होती है, इस प्रकार योगिनी दशा चक्र 36 वर्ष का होता है, मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका उल्का, सिद्धा और संकटा ये आठ योगिनी हैं 7. आषाढ़ कृष्ण एकादशी को योगिनी एकादशी कहा जाता है।

**योगिनीचक्र** पुं. (तत्.) दिशानुसार यात्रा करने के लिए शुभ समय का विचार करने की एक पद्धति जिसमें योगिनी विचार किया जाता है; इसके अनुसार प्रस्थान के समय चंद्रमा का सम्मुख और दाहिनी ओर रहना शुभ होता है, योगिनियों का निवास इस प्रकार होता है: पूर्ण (मेष, सिंह, धनु), पश्चिम मिथुन, तुला, कुम्भ, उत्तर (कर्क, वृश्चिक, मीन) दक्षिण (वृष, कन्या, मकर)।

**योगी** पुं. (तत्.) 1. योग साधक व्यक्ति 2. योग सिद्ध व्यक्ति, सिद्ध पुरुष 3. सुख-दुख में समभाव रखने वाला, आत्मज्ञानी 4. शिव, महादेव 5. राजयोग का अनुयायी 6. हठयोग आदि किसी भी प्रकार के योग का अनुयायी।

**योगीश, योगीश्वर** पुं. (तत्.) 1. महान योगी, श्रेष्ठ योगी 2. याज्ञवल्क्य मुनि और भगवान शिव को भी योगीश्वर कहा जाता है 3. भगवान कृष्ण को योगेश्वर या योगीराज कहा जाता है।

**योगीश्वरी** स्त्री. (तत्.) 1. पार्वती, दुर्गा, महाशक्ति 2. अति श्रेष्ठ योगी स्त्री, योग विद्या की मर्मज्ञ स्त्री।

**योगेन्द्र** पुं. (तत्.) योगेश, योगेश्वर।

**योगेश्वर** पुं. (तत्.) 1. योग विद्या का मर्मज्ञ विद्वान 2. श्रेष्ठ योगी 3. वासुदेव कृष्ण।

**योग्य** वि. (तत्.) 1. लायक, उचित, उपयुक्त 2. किसी कार्य, पद आदि के लिए योग्य, पात्रता, अर्हता रखने वाला, पात्र, अधिकारी 3. गुणी, गुणवान 4.

पढ़ा लिखा, बुद्धिमान, श्रेष्ठ, प्रवीण, कुशल, होशियार 5. समर्थ, निपुण।

**योग्यता** स्त्री (तत्.) 1. योग्य या पात्र होने की अवस्था या भाव 2. पात्रता, लियाकत 3. गुणता, गुणशीलता, उपयुक्तता 4. क्षमता, निपुणता, प्रवीणता 5. बुद्धिमान, समझ मनो. किसी भी प्रकार के (विशेष या सामान्य) व्यवहार की क्षमता काव्य. पदों के अर्थों के परस्पर संबंध में कोई बाधा न होना न्याय. वाक्य में पदों के अर्थ-संबंध की संगति या संभवनीयता, वाक्य के पदों के अर्थों का एक दूसरे से बाधित न होना जैसे- "अग्नि से वृक्ष को सींचो" वाक्य में 'अग्नि' और 'सींचो' पदों में योग्यता नहीं है, अर्थबाधित है क्योंकि अग्नि से सींचना असंभव है जैन दर्शन ज्ञान को आवृत करने वाले कर्म का कारण, किसी कार्य को करने की शक्ति और कार्य के कारण से उत्पन्न होने की शक्ति।

**योजक-चिह्न** पुं. (तत्.) एक प्रकार का विराम चिह्न जो दो शब्दों के बीच में आकर उन्हें जोड़ता है जैसे- माता-पिता, 'भाई-बहन' वि. 1. जोड़ने वाला, संयुक्त करने वाला, मिलाने वाला 2. समुच्चय बोधक अव्यय को योजक अव्यय भी कहा जाता है।

**योजन** पुं. (तत्.) 1. जोड़ना, संगम, मिलाप 2. एकत्र करना 3. जोतना-जैसे जुए में बैल आदि को जोतने की क्रिया 3. दूरी नापने का एक पुराना माप जो 4000 हाथ या कोस (लगभग 8 मील) के बराबर माना जाता है उदा. "सत योजन तेहि आनन कीन्हा" रामचरित मानस।

**योजनगंधा** वि. (तत्.) 1. जिसकी गंध एक योजन दूर तक अथवा बहुत दूर तक जाती हो 2. स्त्री. राजा शांतनु की पत्नी सत्यवती 3. कस्तूरी।

**योजना** स्त्री. (तत्.) 1. किसी कार्य को करने का प्रस्तावित स्वरूप या रूपरेखा 2. आयोजन 3. रचना, बनावट 4. व्यवस्था, प्रबंध।

**योजनीय** वि. (तत्.) 1. योजना करने योग्य 2. जो किसी काम में लगाए जाने के योग्य हो 3. जो मिलाने या जोड़ने के योग्य हो।